REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 9 | JUNE - 2018

महेश्वरी साडी उद्योग में उत्पादन की स्थिति

डॉ. स्निग्धा भट्ट

शोध सारांश :-

भारत का हृदय मध्यप्रदेश के दक्षिण-पश्चिम मे स्थित महेश्वर निमाड अंचल का एक छोटा सा कस्बा है, यही पर विश्वप्रसिद्ध महेश्वरी साडीयों का निर्माण होता है प्रस्तुत शोध पत्र में महेश्वरी हाथ करघा उद्योग में उत्पादन की स्थिति का विश्लेषण किया गया है महेश्वर 22'11 उत्तरी अक्षांश तथा 75'36 पूर्वी शिखर पर उत्तर मे इन्दौर से 90 कि.मी. तथा पश्चिम मे धामनोद से 13 कि.मी. पूर्व मे बडवाह से 45 कि.मी. तथा दक्षिण मे खरगोन से 32 कि.मी. की दूरी पर नर्मदा नदी के तट पर बसा है। यहां की मिट्टी तथा जलवायु जो है, वह कपास तथा गेंहू की उपज के लिए उपयुक्त है। इसके अतिरिक्त ज्वार व मक्का की फसल भी यहां उत्पादित होती है। महेश्वर मे कपास का बीज (बिनौले अथवा कांकडे) निकालने का कार्य बडी मात्रा मे किया जाता है। कुटीर उद्योग के रूप मे हथकरघा साडी उद्योग अपने आप मे एक मिसाल है। हथकरघा साडीयो मे हाथ से साडियो का निर्माण किया जाता है। हथकरघा साडीयो के निर्माण मे कठिन परिश्रम बुनकर द्वारा किया जाता है।

प्रस्तावना महेश्वर का ऐतिहासिक परिचय :-

इतिहास प्रतिसद्ध नगरी महिष्मती जो कि वर्तमान मे महेश्वर नगर नाम से जानी जाती है। अपने गौरवपूर्ण इतिहास तथा प्रायः स्मरणीय मॉ अहिल्या देवी के द्वारा निर्मित सुन्दर मनोहारी मंदिर छत्रियॉ तथा पावन कल-कल बहती नर्मदा तथा उसके घाट के लिए सारे देश मे ही नही अपितु विश्व मे भी प्रसिद्ध है।

इन्ही विशेषताओ के साथ एक बडी विशेषता भी इस नगर के नाम के साथ जुडी है। वह है महेश्वरी साडीयो का उद्योग।

मध्यप्रदेश के दक्षिण पश्चिम मे नर्मदा के गोद मे बसने वाला महेश्वर ऐतिहासिक स्थल है। यह नगरी पौराणिक व गौरवशाली संस्कृति अपने मे समेटे हुए है।

वर्तमान महेश्वर सहस्त्रबाहु और सहस्त्रार्जुन का पराक्रम स्थल है। महेश्वरी का इतिहास कई पुराणो व महाकाव्यो मे भी मिलता है। महाभारत, मत्स्य, पुराण, पद्म पुराण पातांजल व कालिदास की कृतियो मे बने शिलालेखो मे उल्लेखित महिष्मति ही महेश्वर है। यहां चिंतामण गणेशजी का मंदिर क्षेत्र प्रसिद्ध है। राजराजेश्वर के मंदिर मे 11 दीपक सदियो से प्रज्वलित है। जिनकी लौ कभी भी बुझी नही है। महेश्वर का किला मुगल सम्राटो के शासन की देन है। इसे अकबर के शासन काल मे निर्मित किया गया था। यह भारतीय कला का उत्कृष्ट नमूना है। मुगलो के बाद उनके कर्णधार बन पेशवाओ ने शासन की बागडोर संभाली। होल्कर वंश की महारानी अहिल्याबाई ने सन् 1766 मे महेश्वर की राजगद्दी संभाली, तब महेश्वर होल्कर राज्य की राजधानी बना। देवी अहिल्या का जन्म सन् 1725 मे हुआ, उन्होने 1784 तक शासन किया, वे शिव को आराध्य मानती थी, अतः यहां स्थित मंदिर मे भगवान शिव की मूर्ति तथा शिवलिंग स्थापित है। आज भी इन मंदिरो मे हजारो शिवलिंगो का मिट्टी से निर्माण प्रतिदिन होता है तथा उनका पूजन कर उन्हे नर्मदा मे विसर्जित किया जाता है। देवी अहिल्याबाई का सन् 1795 मे देहावसान हो गया था, परन्तु आज भी महेश्वरी नगरी अहिल्याबाई के आशीर्वाद से पूरपूर्ण है।

महेश्वरी साडी उद्योग का परिचय :-

भारतीय संस्कृति मे महिला परिधानो मे साडी का विशेष महत्व है। यह प्राचीन समय से प्रचलित है। पुराने समय मे साडी सूत कातकर बनाने के पश्चात् करघो पर इसका निर्माण होता था। उस समय महीन सूत नही मिलता था। जिससे साडी को बनाने मे कठिन श्रम लगाता था। प्राचीन समय मे हस्तकरघा से निर्मित साडीयो मे अनुपम कला का सौंदर्य कार्य देखने को मिलता है एवं बाजार मे हस्तकरघा द्वारा निर्मित साडीयो की बहुत मांग थी। समय बदलता गया और बदलते समय के साथ-साथ महीन सूत का मिलना प्रारंभ हुआ और हथकरघो पर साडीयो का निर्माण होता गया।

धीरे-धीरे साडीयो की किस्मो मे भी परिवर्तन आया और साडीयो मे तरह-तरह की कारीगरी और जरी का काम होने लगा। जिससे साडीयो मे और अधिक सुन्दरता आने लगी।

तत्कालीन समय मे बनारस एवं कांजीवरम दो केन्द्र थे, जहॉ साडीयो पर जरी की कारीगरी की जाती थी। फिर धीरे-धीरे इस कला का प्रसार अन्य जगहो पर भी होने लगा। जैसे चंदेरी, बुरहानपुर, महेश्वर की साडी की हस्तकला के प्रमुख केन्द्रो के रूप मे उभरकर आने लगा तथा आज की स्थिति मे हस्तकरघो से निर्मित साडीयॉ सम्पन्न वर्ग की पहली पसंद बनती जा रही है।

महेश्वर मे हथकरघा उद्योग :-

प्रारंभिक समय मे प्रचलित साडी उद्योग वर्तमान मे संपूर्ण वस्त्र उद्योग का रूप धारण कर चुका है, जिसे महेश्वर वस्त्र उद्योग के नाम से जाना जाता है। 18 वी शताब्दी मे अहिल्याबाई ने माण्डव और सूरत से कारीगरो को महेश्वर मे बसाया एवं महेश्वर वस्त्र उद्योग की स्थापना की। इस समय साडी उद्योग मे केवल हथकरघे का ही प्रचलन था। किन्तु 19 वी शताब्दी मे ब्रिटिश शासन के दौरान आधुनिक मिलो की स्थापना हुई तथा इन पर बनी साडीयो का प्रचलन बढ गया, जिसके कारण हथकरघा बुनकरो की आर्थिक स्थिति बिगडी थी परन्तु शासन द्वारा इसमे सुधार हेतु कोई सफल प्रयास नही किया गया।

सन् 1921 मे तत्कालीन शासक श्रीमंत तुकोजीराव होल्कर द्वारा महेश्वर मे विविंग एण्ड डाईंग डिमांस्ट्रेशन फैक्ट्री की स्थापना की गई। जिसका प्रमुख उद्देश्य बुनकरो तात्कालिक बुनाई से संबंधित तकनीकी से अवगत कराना था, जिसका वर्तमान नाम शासकीय हथकरघा प्रशिक्षण केन्द्र है।

सन् 1978 मे शिवाजी राव होल्कर द्वारा इस उद्योग और अधिक संरक्षण हेतु रेवा सोसायटी की स्थापना की जिससे महेश्वरी साडी उद्योग को एक अच्छा संगठन तथा सहयोग प्राप्त हुआ। शासकीय हथकरघा प्रशिक्षण केन्द्र एवं मध्यप्रदेश सिल्क फेडरेशन, मध्यप्रदेश खादी बोर्ड हस्तशिल्प और हथकरघा विकास निगम आदि संस्थाओ के सहयोग से महेश्वर वस्त्र उद्योग का विकास संभव हो पाया।

महेश्वर वस्त्र उद्योग की प्रगति प्रमुख रूप से तीन चरणो मे विभाजित की जा सकती है।

1. प्रारंभिक चरण (राजाश्रय)
2. स्वतंत्रता के पूर्व की स्थिति
3. स्वतंत्रता के पश्चात् की स्थिति

अध्ययन का उद्देश्य :-

मध्यप्रदेश भारत का एक विकासशील प्रान्त है। अल्पविकसित देशो पर किए गए शोध अध्ययनो से ज्ञात होता है कि गांवो मे गैर कृषि आय प्रदान करने वाली, कम विनियोग तथा उच्च रोजगारोन्मुख गतिविधियो ग्रामीण आय की विषमताओ को कम करने मे सहायक सिद्ध हुई है। मध्यप्रदेश के विकास पथ मे कई चुनौतियॉ एवं समस्याऍ है। क्या हथकरघा उद्योग एवं ग्रामोद्योग के द्वारा मध्यप्रदेश अपने विकास की मंजिल को प्राप्त कर सकता है। यदि हां तो हथकरघा उद्योग तथा अन्य हस्तशिल्प उद्योगो मे विनियोग, उत्पादकता विपणन एवं रोजगार की स्थिति क्या है। इन विभिन्न पहलुओ के संदर्भ मे गहन अध्ययन करना प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य है।

हथकरघा उद्योग की उत्पादन एवं विक्रय संबंधी स्थिति का विश्लेषण एवं प्रतिस्थापन वस्तुओ से प्रतियोगिता का स्वरूप तथा हथकरघा उद्योग पर प्रतियोगिता के कारण पडने वाले प्रभावो का विश्लेषण करना भी शोध अध्ययन का एक अन्य उद्देश्य है।

महेश्वरी साडी उद्योग के अन्तर्गत उत्पादन :-

महेश्वर की प्रसिद्धी मे प्राचीन ऐतिहासिक संस्कृति के साथ-साथ यहां बनी हुई हस्तकरघा की महेश्वरी साडीयो ने भी चार चांद लगाये है। महेश्वरी साडी महेश्वर का गौरव है।

महेश्वर साडीयॉ पूर्णतः क्षेत्रिय कला की देन है, जो कि महेश्वर मे ही जन्मी, बडी और पनपी है। आज महेश्वरी साडीयॉ अपनी मौलिकता व परंपरागत रूप के लिए विश्व स्तर पर जानी जाती है।

कृषि प्रधान इस देश मे कुटीर उद्योग की भूमिका कुछ कम नही रही है। इसी श्रृंखला से हस्तकला से सुसज्जित साडी उद्योग की जडे देहातो मे जमकर ग्रामीण आंचलो मे ही संचालित है।

महेश्वर हस्तकला मे साडीयो का उत्पादन पूर्णतः पारंपरिक तरीके से किया जाता है। हस्तकरघो के प्रयोग सुन्दर कलात्मक साडीयो का उत्पादन बुनकर द्वारा कठोर परिश्रम से किया जाता है।

तालिका
महेश्वर हथकरघे उद्योग की वर्तमान स्थिति

स्थापित करघो की संख्या	1000
कार्यशील करघो की संख्या	1000
सहकारी क्षेत्र मे कार्यशील करघे	150
बाहर कार्यशील करघे	850
रोजगार प्राप्त करे हुए व्यक्तियो की संख्या	3000
सहकारी क्षेत्र मे रोजगार	450
सहकारी क्षेत्र के बाहर रोजगार	2550
कार्यशील बुनकर सहकारी समिति की संख्या	2
वार्षिक उत्पादन राशि मे	7 करोड
वार्षिक उत्पादन मीटर मे	6.50 लाख मीटर

(स्त्रोत : म.प्र. हथकरघा प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा प्रकाशित पत्रिका से प्राप्त पेज नं. 6 से 27)

महेश्वरी उद्योग मे उत्पादित वस्तुएँ :-

महेश्वरी हथकरघा उद्योग मे मुख्यतः साडी का ही उत्पादन होता है। महेश्वरी साडी मे 80 से.मी. का ब्लाउज भी साडी मे हाता है। महेश्वरी हथकरघा उद्योग द्वारा बाजार मांग के कारण अन्य ड्रेस मटेरियल, सलवार सूट, दुपट्टे, शॉल पगडी आदि का भी उत्पादन होता है। महेश्वरी उद्योग मे अन्य स्थानो की तलना मे कपडे की किस्म कपडे के Texture के अनुसार बहुत अधिक है तथा Multi Fibre Product का उत्पादन अधिक होता है। टसर यार्न का उपयोग भी महेश्वरी उत्पादन मे प्रारंभ किया गया है। उद्योग मे प्रयोग के तौर पर मध्यप्रदेश हस्तशिल्प विकास निगम के माध्यम से कॉटन फिनीशिंग वस्त्र के सेम्पल तैयार करके आयतक देश जापान, इटली तथा बेल्जियम जाता है।

कपडे के किस्म के अनुसार महेश्वरी साडीयो को निम्नलिखित श्रेणी मे रखा गया है।

100 प्रतिशत सूती साडी, गर्म रेशमी साडी, नीम रेशमी साडी, कतान साडी, सेनवरी फाईबर साडी, टीशु साडी, मर्सराईज्ड चैक्स, गुंजा पट्टी, मेरानी, चांद तारा, धल्ला पट्टी, पोकली।

निष्कर्ष :-

महेश्वरी साडी उद्योग हथकरघा उद्योग है, इस उद्योग से उत्पादित साडीयॉ पूर्णतः कलात्मक है तथा साथ ही परम्परागत भी है। महेश्वरी साडी उद्योग मे उत्पादन हेतु विभिन्न समस्याओ का सामना करना होता है। जैसे सर्वप्रथम कच्चा माल विभिन्न राज्यो से मंगवाया जाता है। जिसके कारण समय बहुत अधिक लगता है तथा इन राज्यो से प्रत्यक्ष रूप से महेश्वर मे कच्चा माल नही पहुंच पाता है, जिससे परिवहन लागत भी बहुत लगती है। जिससे महेश्वरी साडीयो मे उत्पादन मे लगने वाले कच्चे माल की मांग के अनुरूप उसकी पूर्ति नही हो पाती है। जिससे इस उद्योग का उत्पादन प्रभावित होता है, साथ ही लागत अधिक लगने से साडीयो का मूल्य भी अधिक हो जाता है। जिससे उपभोक्ताओ के द्वारा इन साडीयो की मांग प्रभावित होती है। लघु एवं कुटीर

उद्योग के वैसे हथकरघा उपयोग एक के अन्तर्गत आता है तथा भारत एक विकासशील राष्ट्र है, तथा यह अपने विकास हेतु निरंतर प्रयासरत है।

"गांधीजी ने भी देश के आर्थिक विकास मे लघु-कुटीर उद्योगो के महत्व को जनमानस के सामने रखते हुए कहा "जब तक हम ग्राम्य जीवन को पुरातन हस्तशिल्प हस्तकरघा के संबंध मे पुनःजागृत नही करते, हम गांवो का विकास एवं पुनः निर्माण नही कर सकेंगे।"

संदर्भ गृंथ सूची

क्रं.	पत्र पत्रिकाओ की सूची	पृष्ठ क्रमांक
1-	Small Scale Industries in India (Nov. 87) Development Commissioner Small Scale Industries. New Delhi	
2.	लघु उद्योगो के विकास के लिए सुविधाएँ एवं सेवाएँ-विकास, आयुक्त लघु उद्योग, नई दिल्ली (जुलाई-90)	
3.	सिद्ध हस्त शिल्पियो को राज्य स्तरीय पुरूस्कार - 1990-91 म.प्र. हस्तशिल्प विकास निगम भोपाल (म.प्र.)	
4.	"हाथकरघा उद्योग" - हाथकरघा संचालनालय म.प्र. शासन ग्रामोद्योग विभाग, भोपाल (म.प्र.)	
5.	महेश्वर एक परिचय-2001-2002-प्रकाशक शासकीय हथकरघा प्रशिक्षण केन्द्र महेश्वर	
6.	हस्तकरघा उद्योग "नया जीवन नया रूप" हथकरघा विकास आयुक्त, उद्योग मंत्रालय भारत सरकार जुलाई, 1978	